अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों का भारतीय ज्ञान–परम्परा में योगदान : एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. हितेश कुमार
प्रचारक भारतीय ज्ञान परंपरा, रेवाड़ी हरियाणा

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध–पत्र भारतीय ज्ञान–परम्परा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में साहित्य की केन्द्रीय भूमिका का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान–परम्परा जिसे वैदिक, उपनिषदिक तथा दार्शनिक ज्ञानधारा का समन्वित रूप माना जाता है, इसके अन्तर्गत साहित्य न केवल ज्ञान का संवाहक माध्यम है, अपितु वह सांस्कृतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का संवर्धक एवं संरक्षक भी है। वेद, उपनिषद, स्मृति–ग्रन्थ, महाकाव्य, गीता तथा भक्ति–साहित्य में निहित ज्ञान–तत्त्व मानव–जीवन के समग्र उत्कर्ष की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

इस अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि साहित्य के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण (Preservation), प्रसारण (ज्तंदेउपेपवद) तथा पुनर्सृजन (Reconstruction) सतत् रूप से सम्पन्न होता रहा है। वैदिक ऋचाओं की मौखिक परम्परा से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य की लिखित एवं संस्थागत परम्परा तक, ज्ञान का यह प्रवाह अखण्ड रूप से विद्यमान है। विशेषतः भक्ति–साहित्य ने ज्ञान को लोकाभिमुख बनाकर जन–सामान्य तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि साहित्य भारतीय ज्ञान–परम्परा की आत्मा है, जो न केवल बौद्धिक परिष्कार करता है, अपितु भावात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नयन का भी आधार प्रदान करता है।

मूलशब्दा :

भारतीय ज्ञान–परम्परा, वैदिक साहित्य, उपनिषद्, भगवद्गीता, भक्ति, आधुनिक संस्कृत साहित्य, ज्ञान–संरक्षण।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय ज्ञान–परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धतम बौद्धिक परम्पराओं में से एक मानी जाती है, जिसका उद्गम वैदिक काल में निहित है। यह परम्परा केवल बौद्धिक चिन्तन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

तक सीमित नहीं है, अपितु यह आध्यात्मिक अनुभूति, नैतिक अनुशासन तथा सामाजिक समन्वय का समेकित स्वरूप प्रस्तुत करती है। 'भारतीय ज्ञान–परम्परा' शब्द उस अखण्ड ज्ञानधारा का द्योतक है, जिसमें वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, स्मृति–ग्रन्थ, महाकाव्य, पुराण तथा दर्शन–ग्रन्थ समाहित हैं। वेदों में निहित मन्त्रात्मक ज्ञान मानव–जीवन के मूलभूत प्रश्नों सृष्टि, ईश्वर, आत्मा एवं प्रकृति का समाधान प्रस्तुत करता है–"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म"[1] यह उद्घोषणा ज्ञान को ब्रह्म के स्वरूप के रूप में स्थापित करती है। उपनिषदों में ज्ञान का आध्यात्मिक उत्कर्ष दृष्टिगोचर होता है, जहाँ आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन किया गया है–"अहं ब्रह्मास्मि"[2] इसी प्रकार, भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म एवं भक्ति का समन्वित दर्शन प्रस्तुत किया गया है–[3] "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" यहाँ ज्ञान को सर्वोच्च शुद्धिकारक तत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। भारतीय ज्ञान–परम्परा में साहित्य की भूमिका भारतीय ज्ञान–परम्परा में साहित्य केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, अपितु वह ज्ञान का सजीव रूप है। साहित्य के माध्यम से

1. ज्ञान–संरक्षण (Preservation)

वेदों की श्रुति–परम्परा में उच्चारण, स्वर एवं छन्द की शुद्धता के माध्यम से ज्ञान का अक्षुण्ण संरक्षण किया गया।[4]

2. ज्ञान–प्रसारण (Transmission)

महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों ने जटिल दार्शनिक सिद्धान्तों को कथा–रूप में प्रस्तुत कर जन–सामान्य तक पहुँचाया। (महाभारत, शान्तिपर्व)

3. ज्ञान–पुनर्सृजन (Reconstruction)

आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने परम्परागत ज्ञान को समकालीन सन्दर्भों में पुनः व्याख्यायित किया है। भक्ति–आन्दोलन और ज्ञान का लोकाभिमुख स्वरूप मध्यकालीन भक्ति–आन्दोलन ने भारतीय ज्ञान–परम्परा को नवीन आयाम प्रदान किया। भक्ति को केवल

[1] तैत्तिरीयोपनिषद्, २.१
[2] बृहदारण्यकोपनिषद्, १.४.१०
[3] गीता, ४.३८
[4] ऋग्वेद, १.१.१

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

धार्मिक भावना न मानकर ज्ञान का सरल एवं सुलभ माध्यम बनाया गया। भक्ति का स्वरूप, सगुण भक्ति (राम, कृष्ण), निर्गुण भक्ति (निर्विशेष ब्रह्म),गीता में भक्ति को ज्ञान एवं कर्म से भी श्रेष्ठ माना गया है–"भक्त्या मामभिजानाति"[5] भक्ति–साहित्य ने ज्ञान को लोकभाषा में प्रस्तुत कर सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित किया।

आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों का योगदान

आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने भारतीय ज्ञान–परम्परा के पुनरुत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों का नवव्याख्यान किया। समसामयिक समस्याओं को संस्कृत में अभिव्यक्त किया। भारतीय दर्शन को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया।

आधुनिक संस्कृतकाव्य, नाटक एवं गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा दार्शनिक गाम्भीर्य का समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और भारतीय ज्ञान–परम्परा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भारतीय ज्ञान–परम्परा को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में सम्मिलित करने पर बल दिया गया है। यह नीतिदपारम्परिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा से जोड़ती है। संस्कृत एवं शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करती है। सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण को सुनिश्चित करती है। साहित्य न केवल ज्ञान का संवाहक है, अपितु वह मानव–जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार भी है। वैदिक काल से आधुनिक युग तक साहित्य ने ज्ञान के संरक्षण, प्रसार एवं पुनर्निर्माण में सतत् योगदान दिया है। अतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि साहित्य भारतीय ज्ञान–परम्परा की धुरी हैप्रमुख साहित्यकार एवं कृतियाँ– पं. रामकृष्ण भट्ट – संस्कृत–निबन्ध–संग्रह, अभिराजराजेन्द्र मिश्र – वागर्थ, डॉ. सत्यव्रत शास्त्री रामायणम् पुनर्नवम्, डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने आधुनिक संदर्भों में रामकथा को पुनः अभिव्यक्त कर यह सिद्ध किया कि परम्परा स्थिर नहीं, अपितु गतिशील है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, वैश्विक संवाद, जैसे विषयों का समावेश हुआ है।

साहित्य और ज्ञान–संरक्षण की प्रक्रिया

[5] गीता, १८.५५

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

भारतीय परम्परा में ज्ञान–संरक्षण के तीन प्रमुख माध्यम रहे– श्रुति (मौखिक परम्परा) स्मृति (लिखित परम्परा) आधुनिक प्रकाशन एवं डिजिटल माध्यम से वेदों का संरक्षण 'घनपाठ' जैसी जटिल विधियों द्वारा किया गया, जो विश्व में अद्वितीय है।

नैतिक शिक्षा एवं सांस्कृतिक एकीकरण

साहित्य भारतीय समाज में नैतिकता एवं सदाचार का संवाहक रहा है। मनुस्मृति में कहा गया है– "धर्मो रक्षति रक्षितः"[6] साहित्य के माध्यम से, धर्म (कर्तव्य), अर्थ (समृद्धि) काम (इच्छा) मोक्ष (मुक्ति) का संतुलित प्रतिपादन होता है।

भारतीय ज्ञानपरम्परा का विकास : परम्परा से आधुनिकता तक

भारतीय ज्ञानपरम्परा स्थिर नहीं, अपितु गतिशील, विकासशील एवं अनवरत प्रवहमान है। वैदिक ऋचाओं से प्रारम्भ होकर यह परम्परा उपनिषदों में दार्शनिक गाम्भीर्य प्राप्त करती है, गीता में व्यावहारिक जीवन–दर्शन का रूप लेती है, और भक्ति–साहित्य में भावात्मक एवं लोकानुकूल अभिव्यक्ति प्राप्त करती है। आधुनिक संस्कृत साहित्य इस परम्परा का नवोन्मेषी विस्तार है, जहाँ प्राचीन तत्त्वज्ञान को समसामयिक संदर्भों में पुनर्स्थापित किया गया है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य और भारतीय ज्ञानपरम्परा

आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रकृति

आधुनिक संस्कृत साहित्य केवल प्राचीनता का अनुकरण नहीं करता, बल्कि नवीन विषयों राष्ट्रवाद, सामाजिक चेतना, विज्ञान, पर्यावरण, वैश्विक शान्ति को भी अपने भीतर समाहित करता है। यह साहित्य परम्परा और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है।

प्रमुख आधुनिक संस्कृत साहित्यकार एवं उनका योगदान

महाकवि माघ के उत्तरवर्ती परम्परा से आधुनिक युग तक

यद्यपि संस्कृत साहित्य की शास्त्रीय परम्परा कालिदास, भारवि, माघ आदि से समृद्ध रही, तथापि आधुनिक युग में भी अनेक विद्वानों ने इस धारा को जीवित रखा।

पण्डित अंबिकादत्त व्यास

[6] मनुस्मृति ८.१५, पृ. २३४

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

इनका योगदान संस्कृत गद्य एवं काव्य दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय है। इन्होंने परम्परागत दर्शन को आधुनिक बौद्धिक विमर्श से जोड़ा।

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

यद्यपि ये हिन्दी एवं संस्कृत दोनों के विद्वान थे, किन्तु इनके संस्कृत काव्य में भक्ति, सौन्दर्य और दर्शन का अद्भुत समन्वय मिलता है।

आचार्य केशव मिश्र एवं हरिदत्त शर्मा

इन विद्वानों ने संस्कृत में आधुनिक निबन्ध, नाटक एवं काव्य की रचना कर यह सिद्ध किया कि संस्कृत भाषा आज भी अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम है।

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री

आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख स्तम्भों में इनका नाम अग्रगण्य है। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्, बृहत्तर भारतम् इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं आध्यात्मिकता का आधुनिक पुनर्पाठ दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने संस्कृत को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र

इनका संस्कृत काव्य आधुनिक संवेदनाओं से युक्त है। प्रमुख कृतियाँ नवगीतिका सौन्दर्यलहरी (नवव्याख्या) इनकी रचनाओं में भक्ति, राष्ट्रप्रेम और मानवीय संवेदना का समन्वय मिलता है।

डॉ. रमाकान्त शुक्ल

इनका योगदान संस्कृत नाट्य एवं काव्य में महत्वपूर्ण है। इन्होंने आधुनिक जीवन की समस्याओं को संस्कृत में अभिव्यक्त किया।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में भक्ति का स्वरूप

आधुनिक संस्कृत साहित्य में भक्ति केवल ईश्वर–समर्पण तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता की सेवा, राष्ट्रभक्ति, पर्यावरण–संरक्षण, वैश्विक शान्ति, इन सबको भक्ति का ही रूप माना गया है।

गीता और आधुनिक व्याख्या

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

"भक्त्या मामभिजानाति" (गीता 18.55) का आधुनिक अर्थ केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जुड़ा हुआ है। आधुनिक साहित्यकारों ने भक्ति को कर्मयोग के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है।

नवभक्ति की विशेषताएँ

आध्यात्मिकता एवं सामाजिकता का समन्वय,

मानव–केंद्रित दृष्टिकोण

सार्वभौमिक नैतिकता

वैज्ञानिक चेतना के साथ आध्यात्मिकता

भक्ति–साहित्य और आधुनिक संस्कृत काव्य की तुलना का आधार मुख्य रूप से परम्परागत भक्ति है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में भक्ति स्वरूप ईश्वर–केन्द्रित मानव एवं समाज–केन्द्रित भाषा लोकभाषाएँ संस्कृत भाषा की आधुनिक अभिव्यक्ति है। जिसका उद्देश्य, मोक्ष, समग्र कल्याण है। भारतीय साहित्य का विकास चार प्रमुख चरणों में देखा जा सकता है– वैदिककाल में यह ज्ञान एवं प्रकृति का आदिम स्वरूप रहा है। जबकि उपनिषद् काल दार्शनिक उत्कर्ष, भक्ति काल लोकाभिमुख आध्यात्मिकता का विषय रहा है। आधुनिक काल में यह समन्वय एवं पुनराविष्कार करते हुए भक्ति को पुनः परिभाषित करते हुए उसे वैश्विक सन्दर्भों में स्थापित किया है।

समकालीन प्रासंगिकता (Expanded Relevance)

आधुनिक युग में भारतीय ज्ञानपरम्परा की उपयोगिता अत्यंत व्यापक है– वैश्विक सन्दर्भ में "वसुधैव कुटुम्बकम्" अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों का आधार है। शान्ति एवं सह–अस्तित्व पर्यावरणीय दृष्टि से प्रकृति को 'माता' मानने की परम्परा का सतत विकास है। शिक्षा में मूल्यपरक शिक्षा, विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय आधुनिक संस्कृत साहित्य में यह स्पष्ट किया गया है कि विज्ञान और अध्यात्म विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

भारतीय ज्ञानपरम्परा एक जीवंत, समन्वयात्मक एवं सार्वकालिक परम्परा है, जिसकी जड़ें अतीत में होते हुए भी उसकी शाखाएँ वर्तमान और भविष्य तक विस्तृत हैं। भक्ति–साहित्य ने इस परम्परा को जन–जीवन से जोड़ा, जबकि आधुनिक संस्कृत साहित्य ने इसे वैश्विक एवं समसामयिक सन्दर्भ प्रदान किया। इस प्रकार, भारतीय ज्ञानपरम्परा केवल ऐतिहासिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान मानवता के लिए मार्गदर्शक प्रकाशस्तम्भ है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य भारतीय ज्ञान–परम्परा की केन्द्रीय धुरी है। यह न केवल ज्ञान का संवाहक है, अपितु सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक अनुभूति का भी आधार है। वेदों की मौखिक परम्परा से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य तक, साहित्य ने ज्ञान को संरक्षित, परिवर्तित एवं प्रसारित किया है। भक्ति–साहित्य ने इसे जनसामान्य तक पहुँचाकर इसे लोकजीवन से जोड़ा।

अतः यह निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साहित्य भारतीय ज्ञान–परम्परा का जीवंत स्वरूप है, जो अतीत, वर्तमान एवं भविष्य को जोड़ने वाला सेतु है।

भारतीय ज्ञानपरम्परा का समग्र अवलोकन

भारतीय ज्ञानपरम्परा मानव सभ्यता की उन प्राचीनतम बौद्धिक परम्पराओं में से एक है, जिसका उद्भव वैदिक युग (आनुमानिक 1500 ई.पू. अथवा उससे पूर्व) में हुआ माना जाता है। इस परम्परा में 'ज्ञान' को केवल सूचना या बौद्धिक संचित सामग्री न मानकर 'परमार्थतत्त्व' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। 'विद्या' को मोक्षप्रदायिनी तथा 'अविद्या' को बन्धनकारिणी कहा गयाकृ "विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह"।[7] भारतीय ज्ञानपरम्परा का आधार बहुस्तरीय एवं समन्वयी है, जिसमें श्रुति–साहित्य (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष), उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र), दर्शनशास्त्र (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त), तथा स्मृतिग्रन्थ (मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, भगवद्गीता) सभी का अभूतपूर्व समन्वय विद्यमान है। ज्ञान का संप्रेषण मुख्यतः गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से होता था, जिसमें श्रवण, मनन, निदिध्यासन की प्रक्रिया द्वारा ज्ञान का आन्तरिकीकरण किया जाता था। यह परम्परा केवल वैचारिक न होकर अनुभवप्रधान थीकृ "श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्"।[8]

भारतीय ज्ञानपरम्परा की बहुआयामी संरचना

भारतीय ज्ञानपरम्परा एकांगी न होकर बहुआयामी है–

आध्यात्मिक आयाम

[7] ईशावास्योपनिषद्, मन्त्र 11
[8] भगवद्गीता, 4.39

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

उपनिषदों में ब्रह्म, आत्म, एकत्व की अनुभूति को ज्ञान का परम लक्ष्य माना गया है– "अहं ब्रह्मास्मि" ।[9] यहाँ ज्ञान मोक्ष का साधन है, जो आत्मानुभूति में परिणत होता है।

वैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय आयाम

आयुर्वेद के ग्रन्थ, विशेषतः चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता, शरीर, रोग तथा चिकित्सा के वैज्ञानिक सिद्धान्तों का विवेचन करते हैं। चरक कहते हैं–"हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्" ।[10]

सामाजिक एवं नैतिक आयाम

मनुस्मृति एवं अन्य धर्मशास्त्रों में सामाजिक संरचना, आचारसंहिता तथा धर्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादन मिलता है "धारणाद्धर्म इत्याहुः" ।[11] साहित्य का महत्व भारतीय ज्ञानपरम्परा में प्रमुख आयाम

1. ज्ञान का संरक्षण एवं प्रसारण

भारतीय परम्परा में साहित्य ज्ञान का मुख्य संवाहक रहा है। प्रारम्भ में वेदों का संरक्षण मौखिक परम्परा द्वारा किया गया, जिसमें उच्चारण की सूक्ष्मतम शुद्धता का ध्यान रखा गया। बाद में पाण्डुलिपियों के माध्यम से यह ज्ञान संरक्षित हुआ। पुराणों ने जटिल दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों को कथात्मक शैली में प्रस्तुत किया। उदाहरणतः खगोल, सृष्टि–विज्ञान एवं भूगोल का वर्णन विष्णुपुराण तथा भागवतपुराण में मिलता है। जैन एवं बौद्ध साहित्य ने भी ध्यान, योग एवं आचारशास्त्र को सरल भाषा में प्रस्तुत कर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया उत्तराध्ययनसूत्र में आत्मसंयम एवं साधना का विस्तृत वर्णन है।

नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण

भारतीय साहित्य का प्रमुख उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर 'हितोपदेश' रहा है। रामायण में आदर्श पुरुषोत्तम राम के माध्यम से धर्म, त्याग एवं कर्तव्य का प्रतिपादन है। महाभारत में नीति, धर्मसंकट एवं जीवन की जटिलताओं का यथार्थ चित्रण मिलता है–"धर्मो रक्षति रक्षितः" ।[12]

[9] बृहदारण्यकोपनिषद्, 1.4.10
[10] चरकसंहिता, सूत्रस्थान, 1.41
[11] मनुस्मृति, 8.15
[12] महाभारत, वनपर्व, 313.128

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

भगवद्गीता का दार्शनिक योगदान–

भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म एवं भक्ति का अद्वितीय समन्वय है–"कर्मण्येवाधिकारस्ते"[13] यह ग्रन्थ साहित्यिक संवाद शैली में जीवन–दर्शन प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञानपरम्परा में भक्ति का विशेष स्थान है। भक्ति केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति न होकर दार्शनिक अनुभूति है। नारदभक्तिसूत्र में भक्ति को परिभाषित किया गया है–"सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा"।[14]

सांस्कृतिक एकीकरण एवं आधुनिक प्रासंगिकता

भारतीय साहित्य ने विविध धार्मिक एवं दार्शनिक परम्पराओं हिन्दू, बौद्ध, जैन को एक सूत्र में पिरोया। पर्यावरणीय चेतना ऋग्वेद में प्रकृति के प्रति श्रद्धा व्यक्त की गई है–"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"।[15] स्वास्थ्य एवं जीवनशैली आयुर्वेदिक ग्रन्थ आज भी समग्र स्वास्थ्य के लिए प्रासंगिक हैं।

नई शिक्षा नीति (NEP) और साहित्य

समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञानपरम्परा के पुनःस्थापन का प्रयास हो रहा है, जिसमें साहित्य को मूल्याधारित शिक्षा का आधार माना गया है। आधुनिक संस्कृत साहित्यकार एवं उनका योगदान आधुनिक युग में भी संस्कृत साहित्य ने ज्ञानपरम्परा को आगे बढ़ाया–

1. पण्डित राजेन्द्र मिश्र

प्रमुख कृतियाँ– गीतिकाव्य, नाट्यकृतियाँ

योगदान–परम्परा एवं आधुनिकता का समन्वय

2. अभिराजराजेन्द्र मिश्र

कृतियाँ– संस्कृत नाटक एवं काव्य

विशेषता– संस्कृत को समकालीन संवेदना से जोड़ना

3. सत्यव्रत शास्त्री

कृति– श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्

योगदान संस्कृत में आधुनिक महाकाव्य परम्परा का पुनरुद्धार

[13] गीता, 2.47

[14] नारदभक्तिसूत्र, 2

[15] अथर्ववेद, 12.1.12

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

4. विद्याधर शास्त्री एवं हरिदत्त शर्मा

संस्कृत गद्य एवं निबन्ध साहित्य के माध्यम से ज्ञानपरम्परा का आधुनिकीकरण इन साहित्यकारों ने सिद्ध किया कि संस्कृत केवल प्राचीन भाषा न होकर जीवंत बौद्धिक परम्परा है। भारतीय ज्ञानपरम्परा में साहित्य का स्थान अत्यन्त केन्द्रीय एवं अपरिहार्य है। यह केवल ज्ञान का भण्डार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति का संरक्षक, नैतिक मूल्यों का संवाहक, आध्यात्मिक चेतना का प्रेरक, तथा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है।

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में भारतीय साहित्य न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है, अपितु विश्वमानव के लिए समन्वय, सहअस्तित्व एवं समग्र विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है। डिजिटल युग में इस परम्परा के संरक्षण एवं प्रसार हेतु नवीन शोध एवं तकनीकी साधनों का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि "साहित्यं विनाऽज्ञानं न पूर्णतामधिगच्छति" साहित्य के अभाव में ज्ञान अपूर्ण ही रहता है।

संदर्भ सूची

ऋग्वेद। (सं०)। ऋग्वेदसंहिता। वाराणसी चौखम्बा प्रकाशन।

अथर्ववेद। (सं०)। अथर्ववेदसंहिता। दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास।

उपनिषद्। (सं०)। ईशावास्योपनिषद्। वाराणसीरू गीता प्रेस।

नारद। (सं०)। नारदभक्तिसूत्रम्। (सूत्र 2, पृ. 14)।

तुलसीदास। (सं०)। रामचरितमानस। वाराणसी गीता प्रेस।

सूरदास। (सं०)। सूरसागर। आगरा साहित्य भण्डार।

शास्त्री, सत्यव्रत। (सं०)। श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्। दिल्ली संस्कृत भारती।

मिश्र, अभिराजराजेन्द्र। (सं०)। आधुनिकसंस्कृतसाहित्यदर्पणः। वाराणसी चौखम्बा।

छान्दोग्य उपनिषद् (सं. 2015). उपनिषद् संग्रह. दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास।

बृहदारण्यक उपनिषद् (सं. 2016). उपनिषद् संग्रह.

महाउपनिषद् (सं. 2014). उपनिषद् संहिता.

गीता (सं. 2018). श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर गीता प्रेस।

चरक (सं. 2010). चरकसंहिता. वाराणसी चौखम्बा।

सुश्रुत (सं. 2011). सुश्रुतसंहिता. वाराणसी चौखम्बा।

आर्यभट (सं. 2009). आर्यभटीयम्. दिल्ली भारतीय विद्या भवन।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

कौटिल्य (सं. 2012). अर्थशास्त्रम्. दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास।

शुक्ल, रामचन्द्र (सं. 2015). हिन्दी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज लोकभारती।

शास्त्री, सत्यव्रत (सं. 2010). श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्. नई दिल्ली।

मिश्र, अभिराज राजेन्द्र (सं. 2012). नवगीतिका. वाराणसी।

शुक्ल, रमाकान्त (सं. 2014). संस्कृत नाट्य साहित्य. दिल्ली।